International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

"महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में बिम्ब–विधान"

बृजेश कुमार सिंह
शोधच्छात्र (संस्कृत विभाग)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

कविता कामिनी–कान्त कालिदास न केवल संस्कृत वाङ्मय के, अपितु विश्व वाङ्मय के मुकुटालंकार है।[1] उनकी सूक्ष्मदृष्टि बाह्यजगत् और अन्तर्जगत् की तात्विक विधाओं का साक्षात्कार करती हुई मनोरम पदावली में उनको अनस्यूत करती है। उनकी कलात्मक तूलिका नीरस में सरसता, कर्कश में कोमलता, कठोर में सुकुमारता, सामान्य में विलक्षणता, दुर्बोध में सुबोधता, काव्य में सर्वात्मकता और प्रसाद में माधुर्य का विम्ब–प्रतिबिम्ब भाव का निदर्शन कराती है।[2] बाणभट्ट अपने ग्रन्थ हर्षचरित में कविकुलगुरू कालिदास के बारे में कहते हैं–

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते।।"[3]

महाकवि कालिदास को आचार्य जयदेव ने निम्नलिखित सूक्ति से विभूषित करते हुये कहते हैं–

"कविकुलगुरूः कालिदासो विलासः।"[4]

महाकवि कालिदास के जीवनवृत्त के विषय में कोई भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों में, महाकवि बाण के तुल्य, अपने जीवन के विषय में कोई सामाग्री नहीं दी है, अतः अन्तः साक्ष्य का अभाव है। महाकवि कालिदास के दो महाकाव्य ग्रन्थ हैं–1. रघुवंशम् 2. कुमारसंभवम्।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उपरोक्त दोनों ही महाकाव्यों में महाकवि कालिदास ने रस, छन्द, अल🕐ार आदि के माध्यम से अतुलनीय बिम्ब–विधान को प्रदर्शित करते हैं। उनका जीवन भौतिक दृष्टि से सुखमय था।[5] उन्हें आर्थिक कष्ट नहीं था। अतएव उन्होंने धनहीनता, दारिद्रय आदि के कष्टों का चित्रण नहीं किया है। उन्हें अपने जीवनकाल में भी पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। उन्होंने स्त्री सौन्दर्य का वर्णन किया है, परन्तु वे कामुकता और विषय वासनामय जीवन को श्रेयस्कर नहीं मानते।

''अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्''[6]

महाकवि कालिदास अपने ग्रन्थ रघुवंशमहाकाव्यम् के नमस्कारात्मक म🕐लाचरण में बड़े ही रोचक ढंग से शब्द और अर्थ के रूप में पार्वती और परमेश्वर के स्वरूप का बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव चित्रित करते हैं।

''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।''[7]

आचार्य वाल्मीकि के आश्रम में परित्यक्त जानकी के करूण–कन्दन का बड़ा ही मार्मिक चित्रण कालिदास ने प्रस्तुत किया है। जानकी के शोक पर संवेदना प्रकट करते हुये मोरों ने नाचना, भ्रमरों ने कुसुम रसास्वाद, मृगियों ने कुश–चर्वण छोड़ दिया था।

''नृत्यं मयूराः कुसुमानि .....।
.....मत्यन्तमासीद रूदितं वनेऽपि।।''[8]

महाकवि वीर रस के माध्यम से भी बड़ा ही रोचक दृश्य उपस्थित करते हुये कहते हैं कि उस युद्ध में सम–बलशालियों से समान शक्तिशालियों का संग्राम

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

हुआ–पैदल से पैदल, रथी से रथी, अश्वारोही से अश्वारोही और गजारूढ़ से गजारूढ़ की भिड़न्त हुई।

''पत्तिः पदाति राथिनं रथेश .....।

.....तुल्यप्रतिद्वन्द्वि बभूव युद्धम्।।''[9]

दाम्पत्य के सुन्दर सम्बन्धों एवं समन्वयात्मक संपर्क की अभिव्यक्ति अज विलाप में परिलक्षित होती है। अज के लिये इन्दुमती न केवल गृहिणी थी, अपितु मित्र, सचिव और ललितकलाविद् शिष्या थीं। उसका वियोग अज का सर्वस्व हरण हैं। ऐसा दाम्पत्य–प्रेम दुर्लभ एवं अतुलनीय है।

''गृहिणी सचिवः सखी मिथः.....।

.....हरता त्वां वद कि न मे हतम्।।''[10]

महाकवि कालिदास ने अपने इसी ग्रन्थ में जीवन–मरण का बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव दर्शन बड़े ही सरल और सुबोध किन्तु भावातिशयपूर्ण शब्दों में प्रकट किया है–

''मरणं प्रकृतिः शरीरिणां .....।

.....यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ।।''[11]

महाकवि कालिदास कवेल एक सुन्दर दीपशिखा की उपमा से 'दीपशिखा कालिदास'[12] हो गये। इन्दुमती स्वयंवर वर्णन में इन्दुमती की उपमा संचारिणी दीपाशिखा से दी गयी है। वह जिस राजा को छोड़कर आगे निकल जाती थी, वह उसी प्रकार विवर्ण और विषादाकुल हो जाता था जैसे संचारिणी दीपशिखा के आगे निकल जाने पर पूवंवर्ती राज–प्रासाद अन्धकारावृत हो जाता है–

''संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ .....।

.....विवर्णभावं स स भूमिपालः।।[13]

शिव–पार्वती के दाम्पत्य प्रेम की अविभाज्यता और अनुकरणीयता की कल्पनापूर्ण तुलना भागीरथी और समुद्र के प्रेम से की है। यदि भागीरथी के लिये समुद्र सर्वस्व है, तो समुद्र के लिये भागीरथी। यही स्थिति शिव और पार्वती के रसात्मक अनुराग की थी।

''तं यथात्म सदृशं वरं वधू.....।

.....सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्।।''[14]

वटु–वेषधारी शिव का कथन है कि यदि पार्वती का शिव से परिणय होता है तो हाथी पर सवारी के योग्य वधू को बूढ़े नन्दी पर बैठा देखकर सभी लोग हँसेंगे। यहाँ पर भी महाकवि ने बड़े ही रोचक एवं हास्य शैली में बिम्ब–चित्रण प्रस्तुत किया है।

''इयं च तेऽन्या पुरतो विडम्बना .....।

.....महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति।।''[15]

इस प्रकार महाकवि कालिदास ने अपने दोनों ही महाकाव्यों में बड़े ही रोचक एवं विविध आयामों में रस, छन्द, अलंकारों आदि के माध्यम से जीवन के प्रत्येक पक्ष का विम्ब–प्रतिबिम्ब भाव प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास (डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी) –पृ0 153
3. हर्षचरित – बाणभट्ट – 16
4. जयदेव, प्रसन्न0 01–22

5. सं0सा0 का इतिहास (डॉ0 कपिल देव द्विवेदी) – भूमिका पृ0 11

6. अभिज्ञान शाकु0 अंक 5 वाक्य 36

7. रघुवंशम् (म🕐लाचरण) – चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन (वाराणसी)

8. रघुवंशम् 14–69

9. रघुवंशम् 7–37

10. रघुवंशम् 8–67

11.रघुवंशम् 8–87

12.सं सां. का इतिहास (डा0 कपिल देवद्विवेदी) – पृ0 159

13.रघुवंशम 6/67

14.कुमार संभवम् 8/16

15.कुमारसंभवम् 5/70